कविता

इधर भी हैं मस्जिदें उधर भी हैं मस्जिदें इधर भी शिवाले इधर भी शिवाले
इधर की मस्जिद तुम्हारे हवाले उधर के शिवाले हैं उनके हवाले

दुबई में मंदिर खड़े शान से देखो हिंद की मस्जिदों की आन-बान देखो
पाकिस्तान में मंदिर पाकिस्तानी रखाएं अफ़ग़ानी रखाएं अफ़ग़ानिस्तान के मंदिर

इंडोनेशिया में मंदिरों की संख्या ना पूछो बीसों हज़ार से ज़्यादा वाँ मंदिर
जबकि दुनिया में सबसे बड़ी है वाँ मुस्लिम आबादी

अब ज़रा बांग्लादेश की तरफ़ एक नज़र हो बांग्लादेश हमारा पड़ोसी मुलुक है
मुस्लिम देश है बांग्लादेश फिर भी है एक लाख से ज़्यादा वाँ हिंदू मंदिरों की संख्या
ढाकेश्वरी देवी का मंदिर है ढाका में

ढाका है बांग्लादेश की राजधानी ढाकेश्वरी देवी के नाम पर ही है ढाका
डेढ़ बीघा ज़मीन ढाकेश्वरी देवी के मंदिर को गिफ़्ट की है
दुर्गा पूजा के मौक़े पर बांग्लादेश की पीएम ने

क़तर एक छोटा सा इस्लामी मुलुक है वहाँ है शानदार माँ दुर्गा देवी का मंदिर
हैं बहरीन जैसे छोटे से देश में आठ आठ मंदिर
बहरीन में है दो सौ साल पुराना हिंदू मंदिर

है ओमान में मंदिर हैं यमन में मंदिर यहाँ तक कि हैं ईरान में मंदिर
भले ये सब मुस्लिम मुलुक हैं फिर भी देखो याँ कितने हैं मंदिर

हाँ नहीं है मंदिर कोई सऊदी अरब में नहीं है वहाँ चर्च भी ये भी सही है
वहाँ के निवासी ही कहाँ हैं हिंदू वहाँ तो लोकतंत्र भी नहीं है

फिर भी मुस्लिम देश बहुत से हैं ऐसे जहाँ लोकतंत्र नहीं फिर भी हैं मंदिर
दुबई में बन रहा है आजकल नया शानदार मंदिर
दुबई के जेबल अली इलाक़े में स्थित है

इसी सन् बाइस में तैयार होने की उम्मीद है
सुना है दीवाली पर रहेगा ये हिंदुओं को तोहफ़ा
तस्वीर में दुबई का वही शानदार मंदिर है
अरबी वास्तुशैली पर स्थापित हिंदू मंदिर है
गल्फ़ मुल्कों में दशकों दशक से कायम हैं हिंदू मंदिर

है अदन की खाड़ी में जो श्रीराम का मंदिर
मुस्लिम देश में स्थित उस मंदिर की कभी शान देखो
है पाकिस्तान में हिंगलाज माता का मंदिर
उमरकोट पाकिस्तान में है शिवजी का मंदिर

वहाँ धूम होती है बहुत शिवरात्रि पर
उठता है बड़ी धूम का शानदार मेला
मलेशिया नाम का एक मुस्लिम मुलुक है
वहाँ हैं तमाम मंदिर ही मंदिर

है मुरगन मंदिर,है बातू गुफ़ा मंदिर
मलेशिया में है मशहूर शीशे का हिंदू मंदिर
वो तीन लाख अलग अलग रंग के शीशों से बना है
सौ बरस पहले मुस्लिम सुल्तान जौहर ने दी थी
इस ख़ूबसूरत मंदिर को बनाने के लिए भूमि

यहाँ इस मंदिर में जड़े हैं तीन लाख रूद्राक्ष भी
शिवजी को अर्पित होता है यहाँ गुलाब जल भी
हैं गणेश जी भी विराजे हैं पार्वती भी विराजीं
दूर दूर याँ आते हैं हिंदू श्रद्धालु जबकि वो तो एक मुस्लिम मुलुक है

हमारा इंडिया तो सेक्युलर मुलुक है
जितना हिंदू है नागरिक उतना मुस्लिम है नागरिक
ना कोई इसमें छोटा ना कोई बड़ा है
संविधान में माना गया है सबको बराबर

तभी तो इंडिया विशाल लोकतंत्र है यहाँ है मुसलमानों की भारी आबादी
तीसों करोड़ है उनकी संख्या उनसे बड़ी है याँ हिंदू आबादी

जितना हिंदू का ये मुलुक है उतना मुस्लिम का वतन है
अंग्रेज़ों से आज़ाद कराने में बहाया है ख़ून मुस्लिमों ने भी
चलो हिंदू मुस्लिम आपसी दुश्मनी को भुलाएं
तुम मंदिर में जाओ हम मस्जिद में जाएं

एक दूसरे के धार्मिक स्थलों के
सम्मान का भाव मन में जगाएँ
दूसरे के धार्मिक स्थलों को तोड़ने और कब्ज़े का
ना भाव तुम मन में लाओ ना हम मन में लाएं

चलो हम सब मिलकर देश को ऊँचा उठाएं
दुनिया में सबसे ऊँचा अपना तिरंगा लहराएं।

-डॉ. शारिक़ अहमद ख़ान

हिंदू हार रहा है / राकेश कायस्थ

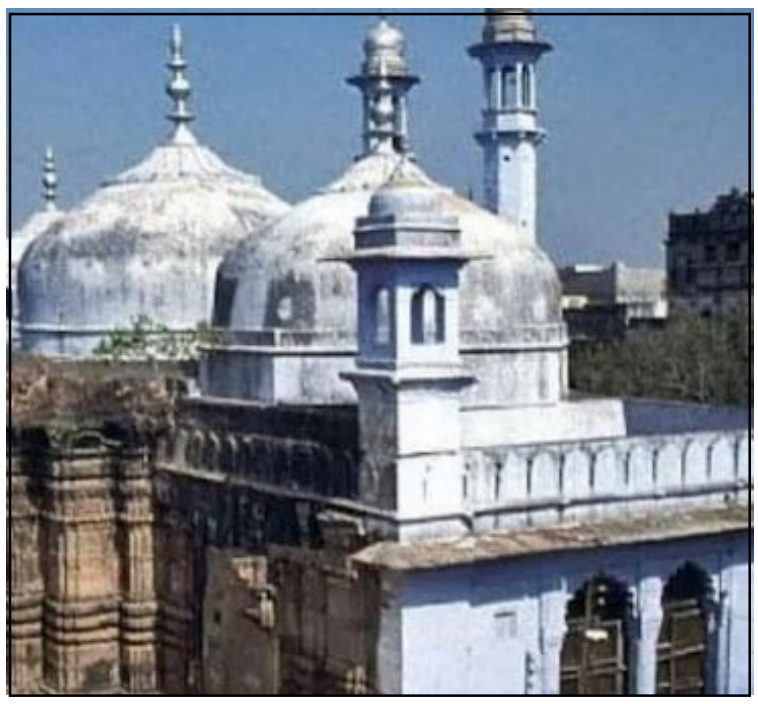

हिंदी के सुपरिचित लेखक राजकिशोर ने एक बार लिखा था-- "मुस्लिम पक्ष अगर राज जन्म भूमि अगर हिंदुओं को सौंप दे तो यह एक बेहतर निर्णय होगा। 1990 के बाद से राम जन्मभूमि का सवाल हिंदू मानस के भीतर एक तरह की हठ की तरह बैठ चुका है और उसका निकलना बहुत कठित है। अगर मुस्लिम समाज उस ज़मीन पर अपना दावा छोड़ देता है, तो इससे समाज में दीर्घकालिक शांति आ सकती है।"

मैं उन लोगों में था, जो राजकिशोर के विचार का समर्थन करते थे। मुझे लगता था कि इतनी जिद क्यों? समाज को और देश को बहुत आगे बढ़ना है। झगड़ा खत्म हो तो आदमी रोजगार और इलाज जैसे मुद्दों पर बात करे। राजकिशोर अब इस दुनिया में नहीं हैं। अगर होते तो मैं पूछता कि अब उनकी राय क्या है, क्योंकि मेरी राय पूरी तरह से बदल चुकी है।

मामला मुँह में खून लगने जैसा हो चुका है। 1989 से लेकर 1992 तक की लगभग फोटोग्राफिक मेमोरी मेरे जेहन में है। जब आडवाणी ने रथ यात्रा निकाली थी और देशभर में हज़ारों लोग मारे गये थे। लेकिन समाज तब भी उतना ज़हरीला नहीं था, जितना आज है।

अयोध्या मामले में एक तरह का नॉवेल्टी फैक्टर था। रामलला के कैद होने की कहानी हिंदू समाज नहीं बल्कि बीजेपी के स्थानीय स्तर के नेताओं ने भी पहली बार सुनी थी। जोश हिलोरे मार रहा था और अयोध्या की तुलना मक्का से की जा रही थी। बहुत सारे तर्क जनता को जायज लग रहे थे। सबसे बड़ा तर्क यह था कि बाबरी मस्जिद सिर्फ एक ढांचा है।

काशी की स्थिति अयोध्या से एकदम अलग है। वहाँ एक मस्जिद है जो सदियों से इबातगाह है और उसके ठीक बगल में मंदिर है, जो हिंदू आस्था का केंद्र है।

मैं वहाँ जब भी गया हूँ, विश्वनाथ जी को पंडे पुजारियों ने वहीं दिखाया है, जहाँ पर वो हैं। हिंदू आस्था वहीं है, मस्जिद के पिछले हिस्से का वो टूटा हिस्सा नहीं, जहाँ फव्वारे में शिवलिंग मिलने का दावा किया जा रहा है।

लोक श्रुतियों में मंदिर के तोड़े जाने की कहानियां ज़रूर हैं। ज्ञानवापी मस्जिद पर खड़े होकर चारो तरफ देखने पर यह महसूस करना कठिन नहीं है कि वहाँ कभी कोई मंदिर रहा होगा। लेकिन प्राचीन भारत में वो कौन सा हिस्सा होगा, जहाँ हिंदू मंदिर या कोई दूसरे प्रतीक ना रहे होंगे?

भारत के चप्पे-चप्पे पर हिंदू धार्मिक प्रतीक चिन्हों का मिलना उतना ही स्वभाविक है, जितना शहरों में आदिम संस्कृति और जन-जातीय चिन्हों का मिलना। जितने भी शहर और कस्बे बनाये गये हैं वो किसी ना किसी को उजाड़ कर बनाये गये हैं। क्या सारे मामलों में क्ऐतिहासिक भूलों का सुधार% संभव है।

क्या "ऐतिहासिक भूलों" के सुधार की माँग उन लोगों से करना तर्कसंगत, न्यायसंगत और नैतिक है, जो इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं। हिंदू समाज जिस रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें किसी तार्किकता और नैतिकता की जगह नहीं बची है। मैं जिस समाज का हिस्सा रहा हूँ, उसका इतना डरावना रूप मैं अपने जीवन में देखूंगा यह बात मेरे लिए अकल्पनीय थी।

सोशल मीडिया पर जो शोर दिखाई दे रहा है, उसमें अपेक्षाकृत शांत दिखने वाले बहुत से लोग अत्यंत हिंसक नज़र आ रहे हैं और परपीड़न के अनूठे आनंद में डूबे हैं। बहुत से स्वयंभू गाँधीवादी और सर्वोदयी तक भी इसी भीड़ में नज़र आ रहे है।

मान लीजिये मस्जिद के अंदर भी धार्मिक प्रतीक चिन्ह ढूंढ लिये जाते हैं और अयोध्या जैसा कोई डिजाइन अपनाते हुए वह जगह भी खाली करवा ली जाती है तो क्या होगा? हिंदू समाज मौजूदा मंदिर वाले विश्वनाथ जी को छोड़कर मस्जिद वाले विश्वनाथ जी को पूजना शुरू कर देगा?

व्यवहारिक तौर पर हिंदू समाज को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि ज्ञानवापी मस्जिद के पिछले हिस्से और पूरी मस्जिद के अंदर क्या है। काशी के सौंदर्यीकरण के नाम पर ना जाने कितने पुराने मंदिर तोड़ दिये गये और शिवलिंग कूड़े के ढेर में नज़र आये। हिंदू आस्था आहत नहीं हुई।

दरअसल हिंदू आस्था का केंद्र अब बदल चुका है और उसके केंद्र में सिर्फ मुसलमानों के प्रति नफरत है। दुनिया का प्राचीनतम धर्म अपने जन्म स्थल पर अपने आपको इस तरह पुनर्परिभाषित करने की जिद पर अड़ा है, जिसके केंद्र में सिर्फ नफरत हो, उसकी अपनी बुनियादी अच्छाइयां नहीं। यह धर्म के भविष्य के लिए अच्छा नहीं है और इस आधार पर मैं यह मानने को तैयार हूँ कि हिंदू धर्म सचमुच खतरे में है।

ज्ञानवापी मस्जिद के भीतर पिछले कुछ समय में जो कुछ हुआ, उसे लेकर हिंदू समाज का एक बड़ा हिस्सा आहलादित है। मन मे इस बात संतोष है कि लाइन में लगवा दिया, तलाशी ले ली। अब जामा मस्जिद से लेकर कुतुब मीनार तक यही होगा। परपीड़न का मास हीस्टीरिया बन जाना पूरी मानव जाति के लिए घातक है क्योंकि विश्व आबादी में एक बड़ी तादाद हिदुओं की है।

आरएसएस राजनीतिक मेधा संपन्न लेकिन नैतिकता शून्य संगठन है। जिसकी भारत में रहने वाले सभी लोगों की सुख-शांति के प्रति कोई जवाबदेही नहीं है। एक प्रक्रिया के तहत हिंदू समाज आज इतना नफरती बनाया जा चुका है, असर अपने समाज और परिवार पर दिखने लगा है, मुसलमानों पर होना तो एक अलग बात है।

मान लीजिये "ऐतिहासिक भूलों को सुधारने" की माँग पर दलित भी अड़ जायें तो क्या होगा? केरल में ब्रेस्ट टैक्स की कहानी गजनबी के भारत पर हमले के मुकाबले काफी नई है और हाल-हाल तक चलती रही है। अगर वहाँ तक दलित समाज जिद पकड़ ले कि इस कुव्यवस्था का बदला लिया जाएगा तो आरएसएस की क्या प्रतिक्रिया होगी? पूछना बेकार है क्योंकि आरएसएस के काम करने के पीछे कोई तर्क पद्धित नहीं बल्कि संख्या बल काम करता है।

संख्या बल इस देश में मुसलमानों के पास भी है। वे अल्पसंख्यक नहीं बल्कि हिंदुओं के बाद इस देश का दूसरा सबसे बड़ा बहुसंख्यक समुदाय हैं। नये तमाशे खड़े करके उन्हें रोजाना उकसाने का सीधा उदेश्य यह है कि अस्सी बनाम बीस एक स्थायी समीकरण हो जाये और तमाम उत्तरदायित्वों से परे आरएसएस अनंत काल तक इस देश पर राज कर सके। लेकिन तमाम उकसावों के बावजूद मुसलमान अब तक अभूतपूर्व संयम का परिचय दे रहे हैं।

स्थायी ध्रुवीकरण के लिए बीजेपी-आरएसएस ने हिंदुओं के भीतर इतनी कुंठा भर दी है कि वह एक पराजित समूह की तरह व्यवहार करने लगा है। वह भारतीय इस्लाम की उन बुराइयों की नकल करने पर आमदा है, जिसका घोषित तौर पर विरोधी रहा है। ये प्रवृतियां हिंदू समाज को कहां ले जाएंगी, धर्मगुरूओं की ओर से इस बात पर कोई चिंता नहीं दिखाई देती।

बीजेपी-आएरएस के पास वो ताकत है कि अगर वो चाहें तो साल के 365 दिन धार्मिक ध्रुवीकरण के मुद्दों को जिंदा रख सकते हैं। इसका समाज और देश को कितना लाभ हो रहा है, यह सोचने की बात है। जिन चीज़ों को हिंदुओं की जीत बताई है, वो असल में नैतिक रूप से उनकी हार है।

मेरा हमेशा से मानना था कि मोदी सरकार नैतिक साहस दिखाये और ये कहे हमारे हिंदू वोटर अयोध्या में मंदिर चाहते हैं और हम संसद में विधेयक लाकर मंदिर बनाये गये। लेकिन जज साहब ने फैसला सुनाया और बिना किसी शर्म-हया के बीजेपी की तरफ से राज्यसभा के मेंबर बन गये। यह मामला कुछ ऐसा ही था, जैसे 1949 मे गर्भगृह में मूर्तियां रखवाने वाले फैजाबाद के डीएम जनसंघ के सांसद बने थे।

सत्य और नैतिकता हिंदू दर्शन के दो बड़े तत्व रहे हैं। क्या आरएसएस की हिंदू आइडियोलॉजी में इन दोनों बातों की कोई जगह है? दुनिया अब भारत को स्वामी विवेकानंद नहीं बल्कि नरसिंहानंद के देश के रूप में देख रही है। एक हिंदू होने के नाते मेरे लिए यह एक बेहद दुखद स्थिति है।